Dr. Syama Prasad Mookerjee
Research Foundation

सभ्यताओं-संस्कृतियों को जोड़ने का उपक्रम

काशी-तमिल संगमम्

Research Team

Abhay Singh

Research Associate
Dr Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

Manujam Pandey

Research Associate
Dr Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

Design

Ajit Kumar Singh

Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

9, Ashoka Road, New Delhi- 110001

Web :- www.spmrf.org, E-Mail: office@spmrf.org,

@spmrfoundation

Phone:011-69047014

विषय सूची

1.	**वक्तव्य अंश**	1
2.	**भूमिका**	3
3.	**काशी तमिल संगमम 2.0 के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ**	5
4.	**काशी तमिल संगमम् के तहत तमिलनाडु से काशी की यात्रा पर आए यात्रियों का अनुभव**	9
5.	देश में काशी तमिल संगमम विचार के जागरण की आवश्यकता - **दिलीप अग्निहोत्री**	19
6.	सांस्कृतिक एकता की सार्थक पहल बनकर उभरा 'काशी-तमिल संगमम' - **बद्री नारायण**	23
7.	2300 साल पहले भी काशी महिमा के गीतों से गूंजती थीं तमिलनाडु की गलियां - **कुमार अजय**	26

वक्तव्य अंश

काशी तमिल संगमम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को आगे बढ़ाता है। काशी तेलुगु संगमम और सौराष्ट्र काशी संगमम के आयोजन के पीछे भी यही भावना थी। देश के सभी राजभवनों में अन्य राज्य दिवस मनाने की नई परंपरा से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को और शक्ति मिली है। एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना का यह प्रवाह आज हमारे राष्ट्र की आत्मा को प्रभावित कर रहा है।

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

भारतीय संस्कृति के दो उत्तुंग शिखर, तमिलनाडु की संस्कृति, दर्शन, भाषा, कला, ज्ञान की काशी की सांस्कृतिक विरासत के मिलन की शुरुआत है। लंबे समय से हमारे देश की संस्कृतियों को जोड़ने का प्रयास नहीं हुआ था। प्रधानमंत्री ने काशी तमिल संगमम के माध्यम से सदियों बाद ये प्रयास किया है। ये प्रयास पूरे देश की भाषाओं और संस्कृतियों को जोड़ने का सफल प्रयास सिद्ध होगा। हमें आनंद है कि भारत की आजादी के अमृतकाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण का काम किया है। मैं इसके लिए उन्हें बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं।

श्री अमित शाह
केन्द्रीय गृह मंत्री

काशी तमिल संगमम प्रधानमंत्री के विजन का परिणाम है। इससे दक्षिण से उत्तर का अद्भुत संगम हो रहा है। इस संगम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बल मिलेगा। इस आयोजन के माध्यम से एक भारत श्रेष्ठ भारत की चेतना को जाग्रत करते हुए प्रधानमंत्री ने एक बड़े अभियान को आगे बढ़ाया है हम सब इसके प्रति आभारी हैं।

श्री धर्मेन्द्र प्रधान

केन्द्रीय शिक्षा तथा कौशल विकास
एवं उद्यमशीलता मंत्री

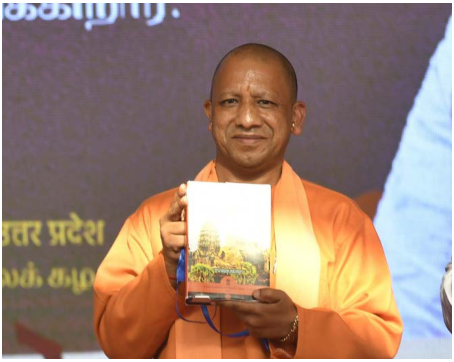

काशी तमिल संगमम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विजन का परिणाम है। इससे दक्षिण से उत्तर का अद्भुत संगम हो रहा है। इस संगम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बल मिलेगा। इस आयोजन के माध्यम से एक भारत श्रेष्ठ भारत की चेतना को जाग्रत करते हुए प्रधानमंत्री ने एक बड़े अभियान को आगे बढ़ाया है हम सब इसके प्रति आभारी हैं।

श्री योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री - उत्तर प्रदेश

भूमिका

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में आयोजित हुआ काशी तमिल संगमम अपने उद्देश्य के चलते ऐतिहासिक है. उत्तर एवं दक्षिण को सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति और सभ्यता के साथ एकता के सूत्र में जोड़ने का जो कार्य पहले होना चाहिए था वह अब हो रहा है. मानव समाज के बीच भौगोलिक दूरियाँ चाहे जितनी हो, संस्कृति, सभ्यता और धर्म जुड़े हों तो उनमें परस्पर एकता का भाव अटूट रहता है. काशी तमिल संगमम इसी उद्देश्य का आयोजन है.

हमारे यहाँ ऋषियों ने कहा है- 'एको अहम् बहु स्याम्'! अर्थात्, एक ही चेतना, अलग-अलग रूपों में प्रकट होती है. काशी और तमिलनाडु के संदर्भ में इस दर्शन को हम साक्षात् देख सकते हैं. काशी और तमिलनाडु, दोनों ही संस्कृति और सभ्यता के केंद्र हैं, दोनों क्षेत्र, संस्कृत और तमिल जैसी विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं के केंद्र हैं. काशी में बाबा विश्वनाथ हैं तो तमिलनाडु में भगवान् रामेश्वरम् का आशीर्वाद है.

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में काशी-तमिल संगमम् का ये आयोजन तब हो रहा है, जब भारत ने अपनी आज़ादी के अमृतकाल में प्रवेश किया है. अमृतकाल में हमारे संकल्प पूरे देश की एकता और एकजुट प्रयासों से पूरे होंगे. भारत वह देश है जहाँ सुबह उठकर 'सौराष्ट्रे सोमनाथम्' से लेकर 'सेतुबंधे तु रामेशम्' तक 12 ज्योतिर्लिंगों के स्मरण की परंपरा है. हम देश की आध्यात्मिक एकता को याद करके हमारा दिन शुरू करते हैं. हम स्नान करते समय, पूजा करते समय भी मंत्र पढ़ते हैं- गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती, नर्मदे सिन्धु कावेरी जले अस्मिन् सन्निधिम् कुरु॥

अर्थात्, गंगा, यमुना से लेकर गोदावरी और कावेरी तक, सभी नदियां हमारे जल में निवास करें. यानी, हम पूरे भारत की नदियों में स्नान करने की भावना करते हैं. हमें आज़ादी के बाद हजारों वर्षों की इस परंपरा को, इस विरासत को मजबूत करना था. इसे देश का एकता सूत्र बनाना था लेकिन, दुर्भाग्य से, इसके लिए बहुत

प्रयास नहीं किए गए. काशी-तमिल संगमम् आज इस संकल्प के लिए एक प्लेटफ़ॉर्म बनेगा. ये हमें हमारे इस कर्तव्यों का बोध कराएगा, और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए ऊर्जा देगा.

इस आयोजन के अन्य आयामों को समझने के उद्देश्य से डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन द्वारा इस ई-बुकलेट का प्रकाशन किया जा रहा है. इस ई-बुकलेट में काशी तमिल संगमम के विषय पर लेखकों के अलावा तमिलनाडु से आए यात्रियों के अनुभव का संकलन किया गया है.

हम लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं तथा हमें यह विश्वास है कि इस ई-बुकलेट के माध्यम से आप पाठकगण एक भारत श्रेष्ठ भारत की कल्पना को मजबूत करने के लिए काशी-तमिल संगमम के आयोजन की महत्ता समझ सकेंगे.

.

डॉ. अनिर्बान गांगुली
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन

काशी तमिल संगमम 2.0 के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

हर हर महादेव! वणक्कम् काशी। वणक्कम् तमिलनाडु।

Those who are coming from Tamilnadu, I request them to use your earphones for the first time using AI Technology.

मंच पर विराजमान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, केन्द्रीय कैबिनेट के मेरे सहयोगीगण, काशी और तमिलनाडु के विद्वतजन, तमिलनाडु से मेरी काशी पधारे भाइयों एवं बहनों, अन्य सभी महानुभाव, देवियों और सज्जनों। आप सब इतनी बड़ी संख्या में सैकड़ों किलोमीटर का सफर तय करके काशी आए हैं। काशी में आप सब अतिथि से ज्यादा मेरे परिवार के सदस्य के तौर पर यहां आए। मैं आप सभी का काशी-तमिल संगमम में स्वागत करता हूँ।

मेरे परिवारजनों,

तमिलनाडु से काशी आने का मतलब है, महादेव के एक घर से उनके दूसरे घर आना! तमिलनाडु से काशी आने का मतलब है- मदुरई मीनाक्षी के यहाँ से काशी विशालाक्षी के यहाँ आना! इसीलिए, तमिलनाडु और काशीवासियों के बीच हृदय में जो प्रेम है, जो संबंध है, वो अलग भी है और अद्वितीय है। मुझे विश्वास है, काशी के लोग आप सभी की सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ रहे होंगे। आप जब यहाँ से जाएंगे, तो बाबा विश्वनाथ के आशीर्वाद के साथ-साथ काशी का स्वाद, काशी की संस्कृति और काशी की स्मृतियाँ भी ले जाएंगे। आज यहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से टेक्नोलॉजी का नया प्रयोग भी हुआ है। ये एक नई शुरुआत हुई है और उम्मीद है इससे आप तक मेरी बात पहुंचना और आसान हुआ है।

Is it ok? The friends of Tamilnadu, is it ok? You enjoy it? So this was my first experience. In future I will use it. You will have to give me the response. Now as usual I speak in Hindi, he will help me

to interpret in Tamil.
मेरे परिवारजनों, आज यहां से कन्याकुमारी-वाराणसी तमिल संगमम ट्रेन को हरी झंडी दिखाई गई है। मुझे थिरुकुर्रल, मणिमेकलई और कई तमिल ग्रंथों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के लोकार्पण का भी सौभाग्य मिला है। एक बार काशी के विद्यार्थी रहे सुब्रमण्य भारती जी ने लिखा था- "काशी नगर पुलवर पेसुम उरैताम् कान्चियिल केट्पदर्कु ओर करुवि सेय्वोम्" वो कहना चाहते थे कि काशी में जो मंत्रोच्चार होते हैं, उन्हें तमिलनाडु के कांची शहर में सुनने की व्यवस्था हो जाए तो कितना अच्छा होता। आज सुब्रमण्य भारती जी को उनकी वो इच्छा पूरी होती नजर आ रही है। काशी-तमिल संगमम की आवाज पूरे देश में, पूरी दुनिया में जा रही है। मैं इस आयोजन के लिए सभी संबंधित मंत्रालयों को, यूपी सरकार को और तमिलनाडु के सभी नागरिकों को बधाई देता हूँ।

मेरे परिवारजनों,

पिछले वर्ष काशी-तमिल संगमम शुरू होने के बाद से ही इस यात्रा में दिनों-दिन लाखों लोग जुड़ते जा रहे हैं। विभिन्न मठों के धर्मगुरु, स्टूडेंट्स, तमाम कलाकार, साहित्यकार, शिल्पकार, प्रॉफेशनल्स, कितने ही क्षेत्र के लोगों को इस संगमम से आपसी संवाद और संपर्क का एक प्रभावी मंच मिला है। मुझे खुशी है कि इस संगमम को सफल बनाने के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और IIT मद्रास भी साथ आए हैं। IIT मद्रास ने बनारस के हजारों स्टूडेंट्स को साइन्स और मैथ्स में ऑनलाइन सपोर्ट देने के लिए विद्याशक्ति initiative शुरू किया है। एक वर्ष के भीतर हुए अनेक कार्य इस बात के प्रमाण हैं कि काशी और तमिलनाडु के रिश्ते भावनात्मक भी हैं, और रचनात्मक भी हैं।

मेरे परिवारजनों,

'काशी तमिल संगमम' ऐसा ही अविरल प्रवाह है, जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' इस भावना को लगातार मजबूत कर रहा है। इसी सोच के साथ कुछ समय पहले काशी में ही गंगा–पुष्करालु उत्सव, यानी काशी-तेलुगू संगमम भी हुआ था। गुजरात में हमने सौराष्ट्र-तमिल संगमम का भी सफल आयोजन किया था। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के लिए हमारे राजभवनों ने भी बहुत अच्छी पहल की है। अब राजभवनों में दूसरे राज्यों के स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाए जाते हैं, दूसरे राज्यों के लोगों को बुलाकर विशेष आयोजन

किए जाते हैं। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की ये भावना उस समय भी नजर आई जब हमने संसद के नए भवन में प्रवेश किया। नए संसद भवन में पवित्र सेंगोल की स्थापना की गई है। आदीनम् के संतों के मार्गदर्शन में यही सेंगोल 1947 में सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक बना था। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना का यही प्रवाह है, जो आज हमारे राष्ट्र की आत्मा को सींच रहा है।

मेरे परिवारजनों,

हम भारतवासी, एक होते हुए भी बोलियों, भाषाओं, वेश-भूषा, खानपान, रहन-सहन, कितनी ही विविधता से भरे हुए हैं। भारत की ये विविधता उस आध्यात्मिक चेतना में रची बसी है, जिसके लिए तमिल में कहा गया है- 'नीरेल्लाम् गङ्गै, निलमेल्लाम् कासी'। ये वाक्य महान पाण्डिय राजा 'पराक्रम पाण्डियन्' का है। इसका अर्थ है- हर जल गंगाजल है, भारत का हर भूभाग काशी है।

जब उत्तर में आक्रांताओं द्वारा हमारी आस्था के केन्द्रों पर, काशी पर आक्रमण हो रहे थे, तब राजा पराक्रम पाण्डियन् ने तेनकाशी और शिवकाशी में ये कहकर मंदिरों का निर्माण कराया कि काशी को मिटाया नहीं जा सकता। आप दुनिया की कोई भी सभ्यता देख लीजिये, विविधता में आत्मीयता का ऐसा सहज और श्रेष्ठ स्वरूप आपको शायद ही कहीं मिलेगा! अभी हाल ही में G-20 समिट के दौरान भी दुनिया भारत की इस विविधता को देखकर चकित थी।

मेरे परिवारजनों,

दुनिया के दूसरे देशों में राष्ट्र एक राजनीतिक परिभाषा रही है, लेकिन भारत एक राष्ट्र के तौर पर आध्यात्मिक आस्थाओं से बना है। भारत को एक बनाया है आदि शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे संतों ने, जिन्होंने अपनी यात्राओं से भारत की राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। तमिलनाडु से आदिनम संत भी सदियों से काशी जैसे शिव स्थानों की यात्रा करते रहे हैं। काशी में कुमारगुरुपरर् ने मठों-मंदिरों की स्थापना की थी। तिरूपनन्दाल आदिनम का तो यहां से इतना लगाव है कि वो आज भी अपने नाम के आगे काशी लिखते हैं। इसी तरह, तमिल आध्यात्मिक साहित्य में 'पाडल् पेट्र थलम्' के बारे में लिखा है कि उनके दर्शन करने वाला व्यक्ति केदार या तिरुकेदारम् से तिरुनेलवेली तक भ्रमण कर लेता है। इन यात्राओं और तीर्थयात्राओं के

जरिए भारत हजारों वर्षों से एक राष्ट्र के रूप में अडिग रहा है, अमर रहा है।

मुझे खुशी है कि काशी तमिल संगमम के जरिए देश के युवाओं में अपनी इस प्राचीन परंपरा के प्रति उत्साह बढ़ा है। तमिलनाडु से बड़ी संख्या में लोग, वहां के युवा काशी आ रहे हैं। यहां से प्रयाग, अयोध्या और दूसरे तीर्थों में भी जा रहे हैं। मुझे बताया गया है कि काशी-तमिल संगमम में आने वाले लोगों को अयोध्या दर्शन की भी विशेष व्यवस्था की गई है। महादेव के साथ ही रामेश्वरम की स्थापना करने वाले भगवान राम के दर्शन का सौभाग्य अद्भुत है।

मेरे परिवारजनों,

हमारे यहां कहा जाता है-

जानें बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहि प्रीती॥

अर्थात्, जानने से विश्वास बढ़ता है, और विश्वास से प्रेम बढ़ता है। इसलिए, ये जरूरी है कि हम एक- सरे के बारे में, एक दूसरे की परम्पराओं के बारे में, अपनी साझी विरासत के बारे में जानें। दक्षिण और उत्तर में काशी और मदुरई का उदाहरण हमारे सामने है। दोनों महान मंदिरों के शहर हैं। दोनों महान तीर्थस्थल हैं। मदुरई, वईगई के तट पर स्थित है और काशी गंगई के तट पर! तमिल साहित्य में वईगई और गंगई, दोनों के बारे में लिखा गया है। जब हम इस विरासत को जानते हैं, तो हमें अपने रिश्तों की गहराई का भी अहसास होता है।

मेरे परिवारजनों,

मुझे विश्वास है, काशी-तमिल संगमम का ये संगम, इसी तरह हमारी विरासत को सशक्त करता रहेगा, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को मजबूत बनाता रहेगा। आप सभी का काशी प्रवास सुखद हो, इसी कामना के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और साथ-साथ तमिलनाडु से आए हुए प्रसिद्ध गायक भाई श्रीराम को काशी आने पर और हम सबको भाव-विभोर करने के लिए मैं श्रीराम का हृदय से धन्यवाद करता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं और काशीवासी भी तमिल सिंगर श्रीराम को जिस भक्ति-भाव से सुन रहे थे, उसमें भी हमारी एकता की ताकत के दर्शन कर रहे थे। मैं फिर एक बार काशी-तमिल संगमम की इस यात्रा, अविरत यात्रा को अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं। और आप सभी का बहुत बहुत धन्यवाद करता हूं !

काशी तमिल संगमम् के तहत तमिलनाडु से काशी की यात्रा पर आए यात्रियों का अनुभव

वणक्कम काशी! मेरा नाम सुन्दरेसन है. मैं कृष्णांजलि अकादमी की छात्र हूँ. मैं और हमारे समूह के साथियों द्वारा यहाँ आयोजन स्थल – नमो घाट पर ‘परम’ नामक नृत्य अभिनय का प्रस्तुतिकरण किया गया. इस दौरान उपस्थित दर्शकों ने हमारा उत्साहवर्धन किया और अभिनय के पश्चात हमसे इसके विषय में जानकारी भी प्राप्त की. काशी तमिल संगमम के माध्यम से संस्कृतियों का वृहद स्तर पर आदान प्रदान हो रहा है. काशी के लोग तमिल और तमिल के लोग काशी के विषय में जानने को उत्सुक हैं.

यह उत्सुकता हमारे सांस्कृतिक भावना को मजबूत करेगी. हम और हमारे समूह के सभी सदस्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हम सभी को यह अवसर उपलब्ध कराया.

मेरा नाम समन्विता है. मैं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को धन्यवाद। हमें विशेष बस द्वारा एयरपोर्ट से प्रयागराज त्रिवेणी संगम तक लाया गया। जहां गंगा जमुना सरस्वती का मिलन होता है वहां हमने स्नान किया.

निस्संदेह काशी तमिल संगमम उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों की दृष्टि से ऐतिहासिक माना जाएगा. व्यवस्थाएं बहुत अच्छी हैं. काशी और प्रयागराज के लोग हमारे साथ पूरी आत्मीयता से मिल रहे हैं. वे दिल खोलकर हमारा स्वागत कर रहे हैं. परम्परागत रूप से हमें चंदन कुमकुम लगाया गया, माला पहनाई गई, पुष्पवर्ष की गई. हमारे लिए स्पेशल काशी तमिल संगमम नाव की व्यवस्था की गई।

हम मानव समाज के बीच भौगोलिक दूरियां चाहे जितनी हों लेकिन यदि संस्कृति, सभ्यता और धर्म जुड़े हों तब उनमें परस्पर एकता का भाव रहता है. काशी तमिल संगमम इसी उद्देश्य का आयोजन है.

वणक्कम काशी, मेरा नाम हरिहरन है. मैं तमिलनाडु के कोयंबटूर का निवासी हूँ. मैं इस समय काशी तमिल संगमम 2.0 में भाग लेने आया हुआ हूं. एक भारत श्रेष्ठ भारत की सोच से ओतप्रोत काशी तमिल संगमम का यह आयोजन कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक दृढ संकल्पित भारत की तस्वीर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रही है. हजारों वर्षों की परम्परा और विरासत को इस आयोजन के माध्यम से पुनर्जीवित किया जा रहा है. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ऐसे प्रयास सराहनीय हैं और सबसे बड़ी बात है कि ऐसे आयोजन में काशी और तमिलनाडु के लोग पूरे उत्साह के साथ सम्मिलित हो रहे हैं.

नमस्ते काशी! मेरा नाम कलायिव्वा है. मैं तमिलनाडु से काशी आया हूँ. मैंने यहाँ काशी विश्वनाथ मंदिर, दशाश्वमेध घाट पर गंगा आरती और अनेक जगहों पर काशी की सभ्यता को देखने और समझने का प्रयास किया.

काशी तमिल संगमम जैसे आयोजन के माध्यम से दोनों संस्कृतियों का अद्भुत जुड़ाव देखने को मिल रहा है. हम भाग्यशाली हैं कि हमारे समय में यह आयोजन हो रहा है. इन आयोजन से दोनों संस्कृतियों के नागरिक भावनात्मक रूप से जुड़ रहे हैं जो नए भारत को और भी मजबूती प्रदान करेगा.

हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद करते हैं कि उनके नेतृत्व में ऐसे आयोजन हुए जिसका तमिलनाडु और काशी के लोग दिल खोलकर स्वागत करते हैं और भविष्य में भी ऐसे आयोजन होने की उम्मीद करते हैं.

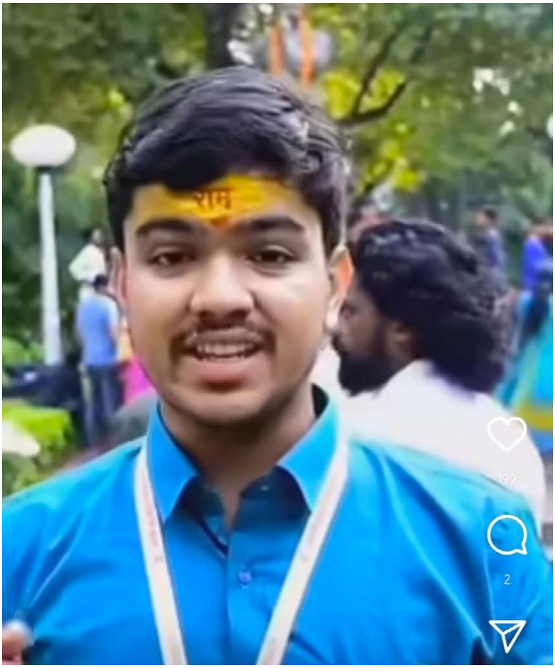

वणक्कम काशी! मेरा नाम साईं आकाश है. मैं मदुरै, तमिलनाडु का निवासी हूँ. काशी तमिल संगमम के दौरान बनारस की यात्रा ने बहुत से अनुभव दिए. सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि हमने काशी की संस्कृति, काशी का आतिथ्य देखा. यहाँ के लोग मिलनसार है. वे हमारी तमिलनाडु के विषय में अधिक से अधिक जानना चाहते हैं.
काशी तमिल संगमम जैसा अद्वितीय आयोजन दोनों संस्कृतियों के वर्तमान और भविष्य के लिए सुखद रहेगा. इस आयोजन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का विशेष रूप से धन्यवाद!
तमिल से काशी की यात्रा के दौरान हम प्रयागराज भी गए जहाँ चंद्रशेखर आजाद मेमोरियल पार्क में है. यह एक अच्छा अवसर है जब हम चंद्रशेखर जी की प्रतिमा के समक्ष उपस्थित हैं जो कि एक निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी थे. ब्रिटिशर्स के द्वारा सताए गए चंद्रशेखर जी की महानता को देश हमेशा याद रखेगा. हम तमिलियन उनके समक्ष अपना सिर झुकाते हैं और उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं.

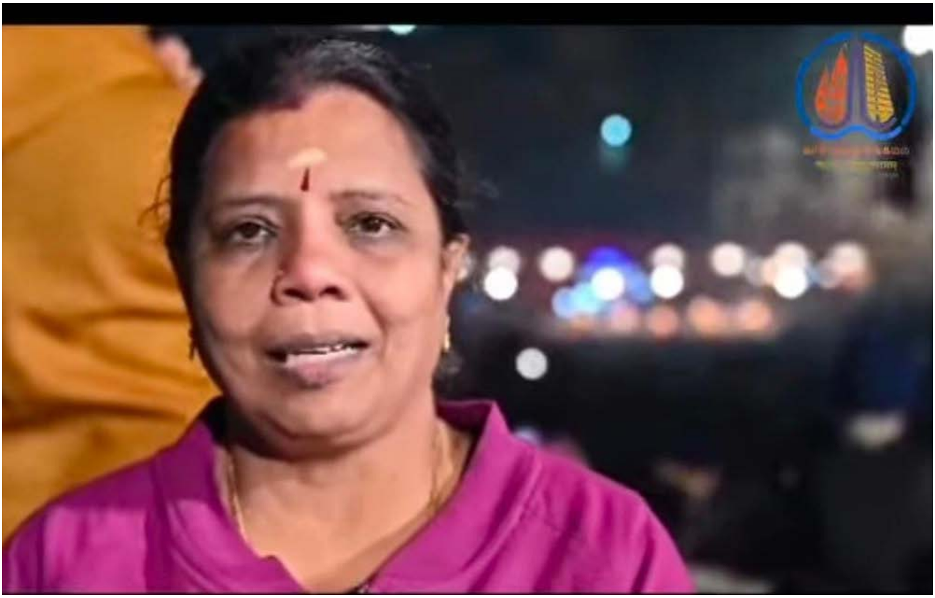

वणक्कम काशी! मेरा नाम भानुमती है. मैं मदुरै से आई हूं. मैंने वाराणसी के नमो घाट पर भव्य आयोजन देखा. मैंने यहाँ गंगा आरती भी देखी. मेरा मन बहुत खुश और प्रसन्न है. जब आप किसी अन्य संस्कृति को इतने पास से देखते और समझते हैं तो इसका आनंद अद्वितीय होता है.
मैंने यहाँ के लोगों से बात की. वे लोग भी तमिलनाडु जाना चाहते हैं. हमारी परम्पराओं को देखना और समझना चाहते हैं. यह अपनापन किसी भी स्वस्थ और समृद्ध समाज के लिए आवश्यक होता है. हम प्रधानमंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने समाज को एक करने जैसे आयोजन को सुनिश्चित किया. जैसा कि स्वयं प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि यह आयोजन एक भारत श्रेष्ठ भारत के संकल्प को पूरा करेगा.

नमस्ते काशी! मेरा नाम नानामणि है. मैं काशी तमिल संगमम के तहत काशी आई हूँ. मैंने यहाँ नमो घाट पर भरतनाट्यम नृत्य किया है. यहाँ के लोगों में इस आयोजन के प्रति बहुत उत्साह है. सबसे अच्छी बात कि काशी और तमिल दोनों परम्पराओं और संस्कृतियों के प्रति लोगों के भीतर आदर की भावना है.

काशी तमिल संगमम जैसा आयोजन और इसकी सोच में भारतीयता को बढ़ावा देने का उद्देश्य है. हमारी परम्पराएं अथवा हमारी संस्कृति भले अलग हो लेकिन हम एकता के सूत्र में बंधे हैं. हम भारतीय हैं.

मैं अपने पूरे समूह के साथ-साथ तमिलनाडु की समस्त जनता की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद करना चाहती हूँ जिनके नेतृत्व में यह आयोजन हो रहा है. इसी के साथ मैं मुख्यमंत्री, वाराणसी में आयोजन समिति और उन सभी लोगों का धन्यवाद आभार करती हूँ जिनके प्रयासों से भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाला यह कार्यक्रम संपन्न होने जा रहा है.

नमस्ते काशी! मेरा नाम के हरिहरन है. हम तमिलनाडु के पुदुकोट्टै जिले के अन्नावसल क्षेत्र से हैं. हमारा एक संगठन है जिसके माध्यम से हम गुणवत्तापूर्ण और परम्परागत धान तथा दूसरे आहार से जुड़े चीजों की खेती कर रहे हैं. इस दौरान खेती से जुड़े क्षेत्र में हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सरकार की कई योजनाओं का लाभ हमें प्राप्त हुआ है. जिसकी सहायता से हमारे किसानों को, उद्यमियों को लाभ मिल रहा है.

हम यहाँ काशी तमिल संगमम में अपने उन उत्पादों के साथ आएं हैं और काशी के लोग इसे पसंद कर रहे हैं. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की यह सोच का परिणाम है कि हम अपने उत्पाद तमिलनाडु से लाकर यहाँ काशी में लोगों को बेच रहे हैं.

हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने हम तमिलनाडु के लोगों को यह अवसर उपलब्ध कराया है.

नमस्कार! मेरा नाम तन्मय है और मैं वाराणसी का रहने वाला हूँ. मैं जागरण पब्लिक स्कूल का छात्र हूँ. आज मैं काशी तमिल संगमम के आयोजन में आया हूँ. काशी तमिल संगमम जो कि उत्तर भारत और दक्षिण भारत का संगम कराता है.

मुझे यह आयोजन बेहद पसंद आ रहा है. मैंने तमिलनाडु से आये लोगों से बातचीत की. उन्होंने हमसे बताया कि उन्हें यहाँ आने में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं हुई. उन्होंने केवल ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराया और इसके बाद सारा प्रोसेस बहुत आराम से हो गया.

उन्होंने यह भी बताया कि उनकी यह काशी यात्रा अविस्मरणीय है. उन्हें यह भी विश्वास है कि भविष्य में भी ऐसे आयोजन होते रहेंगे जिससे एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना मजबूत होती रहे.

वणक्कम काशी! मेरा नाम सुरभि अग्रवाल है. मैं वाराणसी के सनबीम लहरतारा की छात्रा हूँ. काशी तमिल संगमम के तहत आज हम यहां नमो घाट पर तमिलनाडु और काशी के बीच जो एकता है, उसे समझने आए हैं. उसके बारे में जानने आए हैं.

हम जानते हैं कि काशी संस्कृति और परंपराओं का स्थान है, लेकिन आज काशी तमिल संगमम में हम तमिलनाडु को भी उसी संस्कृति और परम्पराओं के रूप में देख पा रहे हैं. यहाँ अनेक ऐसे स्टाल लगे हैं जो तमिलनाडु से जुड़ी चीजों को बहुत सरलता से हम तक पहुंचा रहा है. तमिल भाषा से लेकर वहां के खान-पान के बारे में जानना बहुत रोचक रहा. यह एक शानदार अनुभव है कि हम विभिन्न संस्कृतियों, विभिन्न परंपराओं के बारे में सीख रहे हैं.

मैं अपने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद करना चाहती हूँ जिन्होंने एक भारत श्रेष्ठ भारत की सोच को काशी तमिल संगमम के माध्यम से और भी मजबूत किया है.

नमस्ते, मेरा नाम गणेश प्रसाद मिश्रा है. मैं वाराणसी का रहने वाला हूँ. पिछले वर्ष जब काशी तमिल संगमम का आयोजन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुआ था उस दौरान भी मैं वहां गया था और काशी की गायन परम्परा के तहत मैंने एक गीत प्रस्तुत किया. काशी की ठुमरी, चैती, कजरी आदि गायन परम्परा आज तमिल की गायन परम्परा से एकाकार हो रही है.

यह आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सोच का परिणाम है जिन्होंने उत्तर और दक्षिण के संगीत का समावेश कराया है. जैसा कि प्रधानमंत्री स्वयं कहते हैं कि काशी और तमिलनाडु का संबंध सदियों पुराना है. अब यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम ऐसे कार्यक्रम के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों को काशी और तमिल की साझा संस्कृति के विषय में परिचित कराएं.

देश में काशी तमिल संगमम विचार के जागरण की आवश्यकता

दिलीप अग्निहोत्री

काशी तमिल संगमम वस्तुतः साँस्कृतिक राष्ट्रवाद को ही रेखांकित करता है. जिसमें विविधता है. इसके साथ ही एकता का धरातल भी है. भारतीय चिंतन व संस्कृति में मानव कल्याण की कामना की गई। इसमें कभी संकुचित विचारों को महत्व नहीं दिया गया। समय समय पर अनेक सन्यासियों व संतों ने इस संस्कृति के मूलभाव का सन्देश दिया। सभी ने समरसता के अनुरूप आचरण को अपरिहार्य बताया। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्वाभिमान पर भी बल दिया गया। भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार व क्षेत्र व्यापक रहा है। राष्ट्रीय स्वाभिमान किसी देश को शक्तिशाली बनाने में सहायक होता है। तब उसके विचार पर दुनिया ध्यान देती है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्रसंघ में किया था। इस प्रस्ताव को न्यूनतम समय में सर्वाधिक देशों का समर्थन मिला था। भारत ने कभी अपने मत पर प्रचार तलवार के बल पर नहीं किया।

देश में इसी विचार के जागरण की आवश्यकता है।अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण व भव्य श्री काशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में है। स्वामी विवेकानन्द ने ऐसे ही राष्ट्रीय स्वाभिमान के जागरण का विचार दिया था। उन्होंने परतंत्र भारत को राष्ट्रीय गौरव का स्मरण दिलाया था। इसके माध्यम से उन्होंने न समर्थ भारत का स्वप्न देखा था। वह मानते थे कि विश्वगुरु होने की क्षमता केवल भारत के पास है।

भारत राजनीतिक रूप से परतंत्र हो सकता है, लेकिन विश्व गुरु को सांस्कृतिक रूप से कभी गुलाम नहीं बनाया जा सकता। विश्व और मानवता का कल्याण भारत की वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से ही हो सकता है। अपने

पूर्वजो,सांस्कृतिक परम्पराओं पर गौरव की अनिभूति होनी चाहिए। भारत राष्ट्र बनने की प्रक्रिया कभी नहीं रहा। यह शाश्वत रचना है।

इसका उल्लेख विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में भी है। इसमें कहा गया कि भारत हमारी माता है हम सब इसके पुत्र है। राष्ट्र की उन्नति प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जो लोग भारत को नही जानते वो लोग भारत के बारे में गलत बात षड्यंत्र करके भारत को नक्सलवाद, उग्रवाद आतंकवाद में धकेलने का प्रयास करते है। विष्णु पुराण में कहा गया कि यह भूभाग देवताओं के द्वारा रची गयी है।

भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों को समाहित करने की क्षमता है। संसद के द्वार पर लिखा यह श्लोक आज भी संसद में प्रवेश करने वालों को प्रेरणा देता है कि बिना भेदभाव के काम करें तथा पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखें।भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद सर्वाधिक प्राचीन है। विश्व के अन्य हिस्सों में जब मानव सभ्यता का विकास भी नहीं हुआ था, हमारे यहां राष्ट्र प्रादुर्भाव हो चुका था। ऋग्वेद में राष्ट्र का सुंदर उल्लेख है। राष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं के साथ ही सांस्कृतिक व्यापकता को दर्शाने वाले वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में है। वेदों पुराणों में भारत के भू भाग का विस्तृत और स्पष्ट वर्णन मिलता है। इनमें उल्लिखित है कि हिमालय ये दक्षिण की ओर समुद्र तक विस्तृत सम्पूर्ण भू भाग भारतवर्ष है। भारत का भौगोलिक व सांस्कृतिक क्षेत्र पहले बहुत विस्तृत था। आदि शंकराचार्य सुदूर दक्षिण भारत केरल के थे।

भारत की सांस्कृतिक विरासत के अनुरूप उन्होंने देश में चारपीठों की स्थापना की थी। देश के मठ व हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक है। भारत ने जब तक अपनी इस महान विरासत पर गर्व किया, जब तक यहां के लोग राष्ट्रीय स्वाभिमान से प्रेरित रहे, तब तक भारत समर्थ रहा। वह विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठत रहा। आज फिर उसी राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस दिशा में कारगर प्रयास कर रहे है। उनके नेतृत्व व नीतियों से विश्व मे भारत की प्रतिष्ठा तेजी से बढ़ रही है।

महर्षि अरविन्द भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पुरोधा थे। उन्होंने सजीव भारतमाता की कल्पना की थी। उनका

कहना था कि राष्ट्र का उत्थान सबसे बड़ा पुण्य है।

भारत जब विश्व गुरु था तब उसका ध्वज भगवा हुआ करता था। सूर्योदय अंधकार को दूर करता है। अरुणोदय उत्साह का सन्देश देता है। अग्नि शिखाएं भी भगवा रंग की होती हैं। यह यज्ञ का प्रतीक है। इसमें शुद्धता त्याग, समर्पण,बलिदान, शक्ति और भक्ति का भाव होता है। सूर्य और अग्नि की भांति भगवा रंग अज्ञानता का अंधकार को दूर करता है। ऊर्जा का संचार होता हैडॉ. हेडगेवार चिंतन करते थे कि इतना महान देश विदेशी दासता में कैसे जकड़ गया। इसके पीछे उन्हें दो कारण नजर आए। एक यह कि भारत के लोग अपनी सर्वश्रेष्ठ विरासत पर स्वाभिमान करना भूल चुके थे। इसका प्रभाव उनके आचरण पर पड़ा। दूसरा कारण यह था कि हमारे भीतर भेदभाव आ गया। इससे हमारी संगठित शक्ति कमजोर हुई। इसका विदेशी शक्तियों ने लाभ उठाया। डॉ. हेडगेवार भारत को पुनः परम वैभव के पद पर आसीन देखना चाहते थे। वह हिन्दू समाज को भेदभाव से ऊपर लाकर संगठित करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने

राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ की स्थापना की थी. काशी तमिल संगमम इस विचार के अनुरूप है.

भारतीय सभ्यता और संस्कृति दुनिया में सर्वाधिक प्राचीन है। सभ्यताओं के प्रादुर्भाव के साथ वह तिरोहित भी हुई। मध्यकाल में आक्रांताओं के आस्था के स्थलों पर बेहिसाब हमलों के बाबजूद यह शाश्वत संस्कृति गरिमा के साथ कायम है। स्वतंत्रता के बाद प्रथम उप प्रधानमंत्री बल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से सोमनाथ मंदिर का भव्य निर्माण हुआ। उनके बाद ऐसे सभी विषयों को सांप्रदायिक घोषित कर दिया गया। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद इस प्रचलित राजनीति में बदलाव हुआ। सांस्कृतिक विषयों को देश की अर्थव्यवस्था से जोड़ा गया। तीर्थाटन और पर्यटन अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में समाहित हुए। पौराणिक और ऐतिहासिक स्थलों के विश्वस्तरीय विकास का संकल्प लिया गया।

राष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं के साथ ही सांस्कृतिक व्यापकता को दर्शाने वाले वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में हैं। भारत का भौगोलिक व सांस्कृतिक क्षेत्र बहुत विस्तृत था।

देश के मठ और मंदिर हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक हैं। भारत ने जब तक अपनी इस महान विरासत पर गर्व किया, तब तक यहां के लोग राष्ट्रीय स्वाभिमान से प्रेरित रहे। तब तक भारत समर्थ रहा। वह विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठत रहा। आज उसी राष्ट्रीय स्वाभिमान को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तन्मयता से जागृत करने में जुटे हैं। उन्होंने संकल्प से सिद्धि के अनेक ऐतिहासिक कार्य किए हैं। आज भारत के सभी धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों का विकास किया जा रहा है। सोमनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि तीर्थों का समुचित विकास सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पुनर्जागरण की दिशा में बड़ी पहल है।कोणार्क का सूर्य मंदिर, एलोरा का कैलाश मंदिर, मोढेरा का सूर्य मंदिर, तंजौर का ब्रह्मदेवेश्वर मंदिर, कांचीपुरम का तिरूमल मंदिर, रामेश्वरम मंदिर, मीनाक्षी मंदिर और श्रीनगर का शंकराचार्य मंदिर हमारी निरंतरता और परंपरा के वाहक हैं। भारत आज विश्व के मार्गदर्शन के लिए फिर तैयार है।

(लेखक हिन्दू कॉलेज में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं. प्रस्तुत विचार उनके निजी हैं)

सांस्कृतिक एकता की सार्थक पहल बनकर उभरा 'काशी-तमिल संगमम'

बद्री नारायण

ज्ञान एवं संस्कृतियां संवाद का सबसे बेहतर माध्यम होती हैं। वे हमारे भीतर की संवेदना, मानवीय भाव एवं रचनात्मक संवाद शक्ति को विकसित करती हैं। साथ ही वे 'आपस में जोड़ने एवं जुड़ने' के स्रोत भी देती हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संस्कृति की इस शक्ति को अन्य राजनीतिक दलों से बेहतर समझते हैं। अगर व्यापक अर्थ में देखें तो राजनीति है क्या? राजनीति वस्तुतः जोड़ने एवं जुड़ने का एक माध्यम है। वही राजनीतिक दल एवं शक्ति लगातार फैलती जाती है, जो समाज में रचनात्मक ढंग से संवादों के प्रकार खोजती रहती है और मानस में उनका सार्थक उपयोग करती है।

यही पद्धति न केवल राजनीति, वरन समाज निर्माण में भी मदद करती है। समाज वस्तुतः विविधता में एकता के दर्शन पर खड़ा होता है, जिसमें एकात्मकता का भाव अनेक विविधाताओं को जोड़ता रहता है। इसी से ज्ञान एवं संस्कृतियों में हमारी टकराहटें, हमारे तनाव, हमारी प्रतिद्वंद्विता एवं संघर्ष का भी भाव तिरोहित होता है। ज्ञान एवं संस्कृति समाज के दो परिक्षेत्र हैं, जिनमें संगम एवं सम्मिलन का भाव जागृत होता है। इसीलिए प्रशासन एवं राजनीति को संस्कृति एवं ज्ञान की जरूरत होती है, जिनके माध्यम से सामान्य जीवन में एकात्मकता का भाव जगाया जा सके।

बनारस में हुआ 'काशी-तमिल संगमम' एक ऐसा ही प्रयास है। 'काशी-तमिल संगमम' एक महीने तक चलने वाला कार्यक्रम है, जिसमें काशी एवं तमिल संस्कृति के बीच समाहित अनेक तरह की समानताओं और संवादों को जागृत कर तथा उन्हें पुनर्नवा करने की प्रक्रिया चल रही है।

साहित्य, संस्कृति, भाषा, धर्म, ज्ञान, कला, विज्ञान, तकनीक, देशज उद्यमों से जुड़े हिंदी पट्टी एवं तमिल क्षेत्रों के विशेषज्ञ एवं कलावंत इस कार्यक्रम में शामिल होकर संवाद कर रहे हैं। दोनों ही संस्कृतियों के संत, लोकप्रिय पंथों के महंत, कलाकार, छात्र, युवा, देशज लोककलाओं के कलाकार प्रायः साथ-साथ एक मंच एवं एक स्थान पर अपने ज्ञान एवं कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। रामायण एवं अन्य पौराणिक पाठों पर तमिल व्याख्याकारों की चर्चा इस कार्यक्रम की एक अन्य विशिष्ट प्रवृत्ति के रूप में दिखाई पड़ रही है।

'काशी-तमिल संगमम' एक प्रकार से हिंदी पट्टी एवं तमिल भूमि, उत्तर भारत एवं द्रविड़ क्षेत्र, संस्कृत एवं तमिल जैसे अनेक द्वंद्वों को तिरोहित कर उन्हें एक में समाहित करने की दीर्घकालिक योजना है। इसके लिए काशी को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तावित किया गया है। एक प्रकार से 'काशी' भगवान शिव की नगरी होने के कारण हिंदी पट्टी को तमिल क्षेत्र से जोड़ने एवं तमिल भाव भूमि से जुड़ने का एक माकुल प्रतीक है। तमिलनाडु में काशी को पारिकल्पित कर काशी नाम के अनेक स्थान बनाए एवं बसाए गए हैं।

काशी एवं तमिल संबंधों को मजबूत करने के लिए भगवान शिव से जुड़ी पूजा एवं आध्यात्मिकता दूसरा केंद्रीय प्रतीक है, जिसे 'काशी-तमिल संगमम' में उद्बोधित किया जा रहा है। संबंधों के इस सेतु को मजबूत करने के लिए 'स्मृतियों' का सहारा भी लिया जा रहा है। गत दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर तमिलनाडु से आकर काशीवास करने वाले संतों एवं ज्ञानियों को याद किया। उनके बनाए हुए भवन, धर्मशाला एवं स्मृति चिह्नों की उन्होंने विशद चर्चा की। इस अवसर पर उन्होंने आजादी की लड़ाई में तमिल कवियों, साहित्यकारों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान की याद भी दिलाई। 'सुब्रमण्यम भारती' जैसे तमिल साहित्यकार एवं स्वतंत्रता के भाव के वाहक व्यक्तित्व काशी में ही पढ़े-लिखे एवं तमिल संस्कृति के शक्तिवान प्रतीक बनकर उभरे। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस प्रतीक

से जुड़ी स्मृतियों को और ज्यादा प्रभावी बनाने के लिए काशी में उनकी 'यादों का घर' यानी संग्रहालय बनाने की घोषणा की है।

इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तर भारतीय भाषा एवं तमिल संस्कृति के द्वंद्व को खत्म करने के लिए भाषा भेद को समाप्त कर भावनात्मक एकता मजबूत करने का भी आग्रह किया, जो भारतीयता का मूल है। देखा जाए तो प्रधानमंत्री ने ऐसा आग्रह कर ठीक ही किया, क्योंकि भारतीय विविधता का संतुलन हमारे विविध क्षेत्रों एवं संस्कृतियों में भावनात्मक एकता तलाश करके ही की जा सकती है।

शंकराचार्य, महात्मा गांधी एवं रवींद्रनाथ टैगोर जैसे भारतीयता के वस्तुकारों के चिंतन में भी ऐसे विचार बीज देखने को मिल सकते हैं। वहीं 'प्रचीनता' को जागृत कर आधुनिकता के द्वंद्वों एवं उनसे उत्पन्न होने वाले टकरावों का शमन करने की योजना भी 'काशी-तमिल संगमम' कार्यक्रम की अवधारणा में साफ झलकती है। साथ ही दोनों क्षेत्रों के आधुनिक ज्ञान, दक्षता एवं पेशों के बीच कैसे लाभकारी संबंध बन सके, ऐसी कोशिश भी इस कार्यक्रम से उभरती दिखाई दे रही है। बनारस के देशज उद्यम एवं तमिलनाडु के देशज उद्यम में संवाद बनाने की दीर्घकालिक योजना पर काम करने की मंशा भी इस कार्यक्रम से उभरती दिख रही है।

इस आयोजन से एक ऐसी कार्ययोजना उभरती दिखाई दे रही है, जो सीमांत क्षेत्रों जैसे कि उत्तर-पूर्व, जम्मू-कश्मीर एवं अन्य क्षेत्रों के साथ संवाद को गहन किया जा सकता है। धर्म, संस्कृति, आध्यात्मिकता, साहित्य, कला के क्षेत्र हमें भावनात्मक एकता को मजबूत कर अनेक भेदों एवं टकराहटों को मिटाने में मदद कर सकते हैं, लेकिन यह तभी संभव है जब 'काशी-तमिल संगमम' कार्यक्रम एक 'अवधारणा' एवं माडल के रूप में उभर सके, जिसे अन्य क्षेत्रों में भी कार्यान्वित किया जा सके।

(लेखक जीबी पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक हैं)

2300 साल पहले भी काशी महिमा के गीतों से गूंजती थीं तमिलनाडु की गलियां

कुमार अजय

पौराणिक गाथाओं की लीक से हटकर यदि इतिहास की पगडंडियों को ही पथ प्रदर्शक बनाएं, तो भी यथेष्ट प्रमाण मिलते हैं कि 2300 साल पहले भी तमिलनाडु के नगर-ग्रामों की गलियां काशी की महिमा बखानने वाले गीतों से गूंजती थीं।

खासकर तमिल समाज के लोक साहित्य के पन्ने आज भी गवाही देते हैं कि वहां के लोकमानस में आदिदेव विश्वेश्वर, मोक्षदायिका नगरी काशी और सुरसरि गंगा को लेकर तमिल बंधुओं की अगाध श्रद्धा थी। ये कवि उनकी काशी यात्रा की अदम्य आकांक्षा को संकल्प का रूप देते थे। इन ऐतिहासिक तथ्यों का साक्ष्य लें तो कोई 2000 वर्ष पहले से ही तमिलजनों की काशी यात्रा का क्रम प्रारंभ हो चुका था।

दूरी अधिक होने के बाद भी पैदल व छकड़ों (काष्ठ की गाड़ी) से सैकड़ों श्रद्धालु काशी आते थे, बाबा विश्वनाथ की देहरी पर माथा टिकाते थे। स्थानीय श्रीकांची शंकराचार्य मठ के प्रबंधक व तीर्थ पुरोहित सुब्रमण्यम मणि के अनुसार सातवीं सदी के तमिल लोक साहित्य काशी के महिमागान वाली रचनाओं से भरे पड़े हैं।

तमिलनाडु में तेनकाशी की स्थापना

तथ्य यह भी हैं कि 16वीं सदी में मुगल आक्रांताओं के भय से तमिल समाज की काशी यात्रा का मार्ग अबाध नहीं रह गया। काशी विश्वनाथ मंदिर का ध्वंस हो चुका था। काशी के तीर्थ पुरोहितों के कर्मकांडीय अनुष्ठानों पर रोक लगी हुई थी।

ऐसे में काशीय वैभव के क्षरण से दुखी तमिलनाडु के पांड्य वंश के राजा जटिल वर्मन पराक्रमम ने ताम्रवर्णीय नदी (इस नदी की चर्चा रामायण में भी है) के तट पर एक नई काशी का निर्माण

किया, जो आज भी तेनकाशी के नाम से विख्यात है। तमिल में तेन शब्द का अर्थ दर्शन से है।

काशी यात्रा: तमिल लोकसाहित्य में भी वर्णन मिलता है

अत: यह नगरी वहां दर्शनीय काशी के नाम से प्रसिद्ध है। उल्लेखनीय यह भी कि राजा जटिल वर्मन ने इस नवेली काशी में भी एक भव्य विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया। इसका शिल्प वैभव व स्थापत्य आज भी विश्व विख्यात है।

अप्परस्वामी की काशी यात्रा: तमिल लोकसाहित्य में यह भी वर्णन मिलता है कि सातवीं सदी के तत्कालीन शैव परंपरा में उस समय 63 शैवपंथ शाखाएं सक्रिय थीं।

इन सभी पंथों के 63 धर्माचार्य भी हुआ करते थे। इनमें से एक प्रमुख धर्माचार्य अप्परस्वामी कैलाश मानसरोवर की यात्रा के दौरान कई मास तक काशी प्रवास पर रहे। उन्होंने अपनी रचनाओं में काशी व काशी विश्वेश्वर के ऐश्वर्य वैभव का विस्तार से वर्णन किया है। इससे भी तमिल श्रद्धालुओं की काशी यात्रा की अभिलाषा और बलवती हुई।

छह काशी नगरियों की स्थापना

काशी को लेकर तमिलजनों की श्रद्धा-आस्था की जड़ें कितनी गहराईं तक हैं, इसकी थाह इस बात से लगाई जा सकती है कि दुर्दशा को प्राप्त काशी की यात्रा बाधित हुई तो तमिल राजाओं ने तमिलनाडु में ही काशी के समान पवित्र छह नगरियों का निर्माण कराया और इन सभी को काशी की उपाधि से अलंकृत किया। इनमें गंगईकोंड, शैलपुरम तथा तिरवय्यार काशी के नाम से आज भी प्रतिष्ठित व पूजित हैं।

(लेखक दैनिक जागरण वाराणसी के उप सम्पादक रह चुके हैं. प्रस्तुत विचार उनके निजी हैं.)

विकसित भारत संकल्प यात्रा
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना
श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
पूर्ण राशन आपका अधिकार
वाराणसी
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना
सभी राशनकार्ड धारकों

(पीएम स्वनिधि)

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी)

राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम
आयुष्मान आरोग्य मंदि